



माउण्ट आबू। काशी पंचगंगा घाट से आये श्रीमठ सम्प्रदाचार्य जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी को रघुनाथ मंदिर माउण्ट आबू में मिलकर उनके साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. शशिकांत।



गुमला-लातेहार। सेवाकेन्द्र में आने पर डी.एफ.ओ. विजय शंकर दूबे को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. शांति। साथ हैं वकील राजमणी साहू।



सैफयी-करहल(उ.प्र.)। तम्बाकू निषेध दिवस पर हॉस्पिटल, मेडिकल युनिवर्सिटी में कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं उप कुलपति डॉ. ब्रिगेडियर टी. प्रभाकरन, एच.ओ.डी. डॉ. आदेश, एम.एस. डॉ. भूषण, ब्र.कु. निधि तथा अन्य।



भादरा-राज। लॉर्ड कृष्णा इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में स्कूल के चेयरमैन विजय चौबे तथा सुनिता चौबे द्वारा सम्मानित होते हुए ब्र.कु. चन्द्रकांता।



मोतिहारी-बिहार। पतंजलि द्वारा नगर के आर्य समाज मंदिर परिसर में आयोजित आध्यात्मिक संस्थाओं की संगोष्ठी में ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किये जाने पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अशोक वर्मा।



रावर्टसगंज-उ.प्र.। गुर्मा जेल में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डिप्युटी जेलर शिवचरण जी, ब्र.कु. पंचम सिंह, साई हॉस्पिटल की डॉ. अनुपमा सिंह, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. प्रतिमा तथा अन्य।

स्वयं को 'मैं आत्मा हूँ' के भाव में स्थित करने से ही सफलता

- गतांक से आगे...

बारहवें अध्याय के पहले श्लोक से लेकर आठवें श्लोक तक निराकार या साकार की भक्ति के बारे में बतलाया गया है।

जैसे कई लोग पूछते हैं कि निराकार की भक्ति करें या साकार की भक्ति करें। अर्जुन का भी यही सवाल था कि भगवान, मैं आपको निराकार रूप में याद करूँ या साकार रूप में याद करूँ? भक्ति का अर्थ एवं निराकार की भक्ति का अर्थ, निराकार की भक्ति में विघ्न कौन से आते हैं?

नौवें श्लोक से लेकर बारहवें श्लोक तक यथार्थ भक्ति का मार्ग स्पष्ट किया गया है। तेरहवें श्लोक से लेकर बीसवें श्लोक तक भगवान के प्रियजन के लक्षण बताये गये हैं। बहुत छोटा सा यह अध्याय है लेकिन बहुत महत्वपूर्ण है।

अर्जुन भगवान से प्रश्न पूछता है कि भगवान, आपमें अनन्य भक्ति से लगने वाले और अव्यक्त की उपासना में लगने वाले दोनों में श्रेष्ठ कौन है? आकार रूप में याद करूँ या अव्यक्त रूप में याद करूँ, दोनों में श्रेष्ठ क्या है? साकार स्वरूप की भक्ति श्रेष्ठ है या निराकार स्वरूप की भक्ति श्रेष्ठ है?

भगवान कहते हैं कि मुझमें मन लगा करके सदा योगयुक्त होकर परमश्रद्धा से जो मेरी उपासना करते हैं, वह मेरे मत में सबसे उत्तम योगी हैं। बड़ा रहस्य युक्त जवाब है भगवान

का। भगवान, जिसको कहा ही गया है बुद्धिवानों की बुद्धि, तो इसीलिए भगवान जवाब देते हैं कि मैं जो हूँ, जैसा हूँ उस स्वरूप से याद करो, परमश्रद्धा से मेरी उपासना करो, मेरे मत से

वह सबसे उत्तम योगी है। जो लोग अपनी इंद्रियों को वश में न करके, सबके प्रति समभाव रख करके, उस परम सत्य, अव्यक्त निराकार पर ध्यान एकाग्र करते हैं, वो सभी लोगों के कल्याण में संलग्न रहकर अन्ततः मुझे प्राप्त करते हैं। परंतु जो लोग मन को परमात्मा के अव्यक्त निराकार स्वरूप के प्रति आसक्त करते हैं, उनके लिए उनका देह अभिमान ही उनके पुरुषार्थ और उनकी प्रगति में विघ्न बनता है। निराकार को जब याद करने बैठो तो सबसे बड़ा विघ्न जो आता है वह देह अभिमान ही है। ध्यान करने बैठो तो क्या होता है? कभी घुटना दर्द कर रहा है और कभी पीठ दर्द कर रही है। तो ये जो देह के साथ का लगाव है, ये लगाव हमारे लिए सबसे बड़ा विघ्न बनता है।



-ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

इसीलिए स्वयं के मन को इस देह के अभिमान से भी ऊपर उठा लो। 'मैं आत्मा हूँ' स्वयं को इस भाव में स्थित करो। फिर ये देह अभिमान बाधा नहीं बनेगा, विघ्न नहीं बनेगा। पुरुषार्थ के मार्ग में सबसे बड़ा विघ्न यही बनता है। साकार की पूजा करने में तकलीफ नहीं होती है। श्रीकृष्ण की पूजा करने में तकलीफ नहीं होती है। क्योंकि वो मनोहारी स्वरूप को सामने देखते हैं। कभी-कभी उसमें जैसे खो जाते हैं। उस समय शरीर का भान विघ्न नहीं बनता है। लेकिन जैसे परमात्मा को, निराकार अव्यक्त स्वरूप को याद करने का प्रयत्न करते हैं तो उस दिव्य स्वरूप को मानस पटल पर टिकाए रखने में मेहनत लगती है। इसलिए वहाँ पर फिर देह अभिमान पुरुषार्थ के मार्ग में विघ्न बनता है।

भगवान कहते हैं, हे अर्जुन! तू अपने मन और बुद्धि को मुझमें एकाग्र कर। अगर तू मन को मुझमें एकाग्र करने में समर्थ नहीं है तो योग का अभ्यास करो। बार-बार अभ्यास करो। यदि तुम योग का अभ्यास भी न कर सको तो सिर्फ मेरे प्रति ही यज्ञ कर्म करो। आत्मा का शुद्धिकरण करना है, यही यज्ञ है। यदि तू यज्ञ करने में भी असमर्थ है तो मन, बुद्धि और इंद्रियों को वश में करके सम्पूर्ण कर्मों के फल का त्याग कर और आत्मस्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो। - क्रमशः

ख्यालों के झाड़ने में...

हँसता हुआ मन और
हँसता हुआ चेहरा
यही सच्ची संपत्ति है....!!
इस पर आयकर विभाग
की रेड कभी नहीं
पड़ती....!!

किसी ने गौतम बुद्ध से
पूछा, आप बड़े हैं, फिर भी
नीचे बैठते हैं!
बुद्ध ने बहुत ही खूबसूरत
जवाब दिया..
नीचे बैठने वाला इंसान
कभी गिरता नहीं।



दिल्ली-लोधी रोड। ओएनजीसी लि. में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में 'प्रकृति के साथ सदभाव' विषयक कार्यक्रम कराने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पीयूष तथा प्रतिभागी।



आबू रोड-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर रॉयल राजस्थान पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को योगा कराते हुए ब्र.कु. दिलीप, शांतिवन। समूह चित्र में स्कूल की प्रिन्सिपल मिनाक्षी, ब्र.कु. दिलीप, ब्र.कु. कृष्णा तथा ब्र.कु. राकेश, शांतिवन व अन्य।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स नं.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।